मुस्लिम लीग की उत्पत्ति एवं राजनीतिक स्वरूप

मो० फिरोज आलम

बहावी आन्दोलन के प्रभाव, सर सैय्यद अहमद खाँ के प्रयत्नों, अलीगढ़ के विषाक्त वातावरण, मुस्लिम जागरण और अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो की नीति के परिणामस्वरूप भारत में मुस्लिम साम्प्रदायिकता का उदय 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हो चुका था। 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की माँग व उसकी स्वीकृति ने उसे एक निश्चित दिशा दी और मुस्लिम लीग की स्थापना ने उसे ठोस तंत्र दिया।

सर सैय्यद अहमद खाँ ने सन् 1887 में कांग्रेस के विरुद्ध मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन का प्रारंभ किया जिसके अधिवेशन प्रायः उसी शहर में और उस समय किये जाते थे जिस शहर व जिस समय कांग्रेस अधिवेशन होते थे। उन्होंने कांग्रेस के विरोध में एक अन्य संस्था देश–भक्त एसोसिएशन की स्थापना की। उसके बाद मुस्लिम ऐंग्लो ओरियण्टल डिफेन्स एसोसिएशन नामक संस्थान की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य मुसलमानों में अंग्रेजों व अंग्रेजी शासन के प्रति वफादारी की भावना उत्पन्न करना और ब्रिटिश शासन को शक्तिशाली बनाना था।